IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, July 2023

दौसा जिले में कृषि विकास एवं सम्भावनाएं

डॉ. संध्या पठानिया
लेखक, आचार्य,
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

मुनेश कुमार मीना
अनुरूपी लेखक, शोधार्थी,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

सार

प्राचीनकाल में देवांश नाम से लोकप्रिय दौसा शहर राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित है। कृषि प्रारम्भ से ही ग्रामीण भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार स्तम्भ रही है। राजस्थान की अर्थव्यवस्था भी मूलतः कृषि पर आधारित है। राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 49.53 प्रतिशत क्षेत्र कृषि के उपयोग में आता है।

कृषि प्राचीनकाल से ही प्रचलित है और समय के साथ इसका विकास व संरचनात्मक बदलाव होते हुए वर्तमान तक पहँुची है। भारत का औद्योगिक एवं आर्थिक विकास कृषि की नींव पर टिका है। कृषि की रीढ़ भारत का किसान है। भारत में कृषि संरचना में पिछले कुछ दशकों के दौरान बड़े परिवर्तन आए हैं। देश में जोत छोटी हो रही है और धीरे-धीरे अधिकांश जमीन औसत दर्जे और छोटे किसानों में बंट रही है। कुल मिलाकर देश में छोटे किसानों का प्रतिशत 83.5 है।

कृषि योजनाओं के विस्तार और भूमि सुधार के लिए किये प्रयासों से अब राज्य में दो तिहाई से अधिक भूमि सिंचित हो गयी है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह सबसे बड़ा राज्य है। सिर्फ पूर्वी हिस्सा मैदानी है। इसके बाद भी अध्ययन क्षेत्र के हर हिस्से में खेत लहलहाते हुए दिखाई पड़ते है।

मृदा की उत्पादकता में भिन्नता, मृदा का लवणीय व क्षारीय होना भी कृषि को प्रभावित कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त सीमित जल की उपलब्ध कृषि उत्पादन को सीमित कर देता है। राज्य में वर्ष पर्यन्त बहने वाली नदियों का अभाव होने से सिंचाई सुविधाओं में कमी रहती हैं यद्यपि सिंचाई सुविधाओं का विकास किया जा रहा है। दौसा जिले में किसानों का अशिक्षित होना, पंूजी की कमी, कृषि यंत्रीकरण का सीमित होना, खेतों का आकार छोटा होना तथा निर्वाहक कृषि की प्रधानता आदि वे कारण है, जिनसे कृषि आज भी पिछड़ी हुई है। राज्य सरकार ने समय-समय पर अनेक कृषि विकास योजनाएँ प्रारम्भ कर कृषि को नई दिशा प्रदान की है। इसके परिणमास्वरूप जिले में निर्वाहक कृषि के स्थान पर किसान व्यापारिक कृषि में प्रवृत्त हुए हैं। इन उपायों से

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, July 2023

खाद्यान्न, तिलहन, दलहन एवं अन्य व्यापारिक कृषि उपजों के उत्पादन में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

मुख्य शब्दः भूमि सुधार, कृषि, संभावनाएं, व्यापारिक कृषि, कृषीय तकनीकी, औद्योगिक विकास, पशुपालन, प्राकृतिक विपदाएं, कृषि जोत

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- सिंह, जसवीर (1976), "एग्रीकल्चर ज्योग्राफी ऑफ हरियाणा", विशाल पब्लिकेशन्स, विश्वविद्यालय कैम्पस, कुरूक्षेत्र, हरियाणा।
- ओचिय एस. क्रिश्चियन (2014), "कृषि आधुनिकीकरण, संरचनात्मक परिवर्तन और गरीबी समर्थक विकासः कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य के नीति विकल्प", जर्नल ऑफ इकोनोमिक स्ट्रक्चर (3) आर्टिकल संख्या (8)
- रानी मनीषा (2015), "कम विकसित देशों में कृषि आधुनिकीकरण", एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडायमेंशनल रिसर्च (एजेएमआर),4(3), 281-284.
- एण्डरसन, आर.एल. (1968): ए सिमुलेशन प्रोग्राम टू इस्टेबलिस ओपटिमम क्रोप पैट्रन इन इरिगेटेड फार्म रैयज्ड ऑन प्रिसेशन एस्टिमेशन ऑफ वाटर सप्लाई, अमेरिकन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनोमिक्स, वोल्यूम, 50 (5)
- गांगुली, जे. एस. (2001): डेवलपमेन्ट ऑफ इरीगेशन इन इण्डिया, जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल इकोनोमी, लण्डन, वोल्यू.156
- हुसैन, एम. (1976): ए न्यू एप्रोच ऑफ दि एग्रीकल्चरल प्रोडक्टिवटी ऑफ दि सतलज-गंगा प्लेन ऑफ इण्डिया, जियोग्राफिकल रिव्यू ऑफ इण्डिया
- झा, बी.एन. (1999): प्रॉब्लम ऑफ लैण्ड यूटीलाइजेशन "ए केस स्टडी ऑफ कोसी रीजन", क्लासिकल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
- ईनेदी, ज्योरजी (1964): ज्योग्राफिकल टाइप्स ऑफ एग्रीकल्चर, बूडापेस्ट: अप्लाइड ज्योग्ारफी इन हंगरी
- कस्वां, एन.आर. एवं यादव, अनीता (2009): वाटर मैनेजमेन्ट इन एरिड इकोसिस्टम ऑफ इं.गा.न.प.: एन असेसमेन्ट ऑफ खेतावाली डिस्ट्रीब्यूटरी, एनाल्स ऑफ दि राजस्थान ज्योग्राफिकल एसोसियेशन, भीलवाड़ा, वो. 26

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, July 2023

- डॉ. कालिया, सरीना एवं शर्मा, वत्सला (शोध छात्रा) (2003): अजमेर जिले में कृषि आधारित उद्योगों का भौगोलिक विवेचन, ज्योग्राफिकल आस्पैक्ट्स, चित्तौड़गढ़, वो. 6
- मोहम्मद, नूर (1980): पर्सपेक्टिव इन एग्रीकल्चर जियोग्राफी, वोल्यूम-4, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, न्यू दिल्ली
- चौधरी. एस. (2004) : सम एसपेक्ट्स ऑफ एग्रीकल्चरल क्रेडिट इन डवलपिंग इकोनॉमी।
- धवन, बी.डी. (2000) : स्टेडीज इन ट्रेडिशनल एण्ड मॉडर्न इरिगेटैड एग्रीकलचर।
- गुर्जर, आर.के. (1987) : इरिगेशन फॉर एग्रीकलचरल मौडर्नाइजेशन, साइंटिफिक पब्लिशर्स, जोधपुर।
- नित्यानन्द (1945): क्रॉप कोम्बिनेशन रिजन्स इन राजस्थान, जियोग्राफिकल रिव्यू ऑफ इण्डिया
- नेगी, बी.एस. (2014-15) पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण, कमल प्रकाशन मेरठ
- पाण्डे, आर.पी. (1984) ओरियेन्टेशन, डिस्ट्रीब्यूशन एण्ड ओरिजन ऑफ सैण्ड ड्यून्स इन दी सेन्ट्रल लूणी बेसिन, प्रोसेडिंग्स सिम्पोजियम, प्रॉब्लम ऑफ इण्डियन एरिड जोन, गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, देहली, पृ. 16
- प्रसाद, राजेन्द्र (2003): भूमि अवनयन की समस्याएं: साहिबी नदी क्षेत्र (जिला अलवर, राजस्थान) का विशेष अध्ययन, ज्योग्राफिकल आस्पैक्ट्स, चितौड़गढ़ , वो.6
- प्रसाद, राजेन्द्र (2008): भीलवाड़ा जिले में भूमि उपयोग प्रतिरूप, ज्योग्राफिकल आस्पैक्टस, गंगानगर , वो. 10